घर-घर यज्ञ की ज्योत जलाएंगे। फिर से वैदिक युग दोहराएंगे।।

आह्वान

यज्ञ सार्वभौमिक, वैज्ञानिक एवं पंथनिरपेक्ष पावनी परंपरा है। यज्ञ से पर्यावरण शुद्धि, आरोग्य-प्राप्ति, उत्तम कृषि, रेडिएशन से मुक्ति, माइक्रोबायोलॉजीकल प्रदूषण से मुक्ति, मनोकामनापूर्ति, देव पूजन, ईश्वर आराधना, मानस शांति से लेकर मानवीय चेतना का उत्कर्ष करके हमें अति मानस चेतना की ओर अग्रसर करने वाले अनेकों लाभ प्रदान करता है,

सहस्रारम्भः शुचिजिह्वो अग्निः। ऋग्वेद -२,९,१

पवित्र ज्वाला वाली यज्ञाग्नि हजारों लाभ प्रदान करती है। जिसमें दृष्ट-अदृश्य, लौकिक-पारलौकिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक हजारों लाभ शामिल है। तो आइए हम संकल्प लें संसार के श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ को अपनाएं पिंड एवं ब्रह्मांड में संतुलन कायम करने वाले यज्ञ को जीवन का अभिन्न अंग बनाएं एवं प्रकृति मां के प्रति अपने ऋणों को अदा करें।

यज्ञ की यह शुद्ध हवा , सब रोगों की है दवा।

यज्ञ चिकित्सा शास्त्रीय प्रमाण

आयुर्वेदेषु यत्प्रोक्तं यस्य रोगस्य भेषजम्।
तस्य रोगस्य शान्त्यर्थं तेन तेनैव होमयेत्।।

(पंचरत्नसारसारसंग्रह)

आयुर्वेद ग्रन्थों में जिन रोगों के शमन के लिए जिन औषधियों का विधान है,उन-उन रोगों के शमन हेतु उन्हीं औषधियों से हवन करें।

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव।
तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय।।

(अथर्व. 3.11.2)

किसी की आयुक्षीण हो चुकी है, वह जीवन से निराश हो चुका है, मृत्यु के बिल्कुल समीप पहुँच चुका है,तो भी यज्ञचिकित्सा उसे मृत्यु की मुख से लौटा लाती है। अर्थात् उसे पुनः नव जीवन देता है।

यया प्रयुक्तया चेष्ट्या राजयक्ष्मा पुरा जितः।
तां वेदविहितामिष्टमारोग्यार्थी प्रयोजयेत्।।

(च.सं.चि. स्थानम्- 8.122)

प्राचीनकाल में जिन यज्ञों के प्रयोग से राजयक्ष्मा (दुः साध्य रोगों) को जीता जाता था, आरोग्य चाहने वाले मनुष्य को उन वेदविहित यज्ञों का अनुष्ठान करना चाहिए।

यज्ञ चिकित्सा वैज्ञानिक प्रमाण

विभिन्न औषधियों से हवन करने पर उत्पन्न धूम्र में पाए जाने वाले पादप संघटकों (Phytoconstituents) की विभिन्न रोगों के उपचार में भूमिका।

- **Neuroprotective** (न्यूरोप्रोटेक्टिव)- तंत्रिका तंत्र (Nervous System) के बचाव, पुनर्प्राप्ति (recovery) या उत्थान (regeneration) में प्रभावी।
- **Anti-viral** (एंटीवाइरल)- वायरस के फैलाव को रोकने एवं नष्ट करने का कार्य करता है।
- **Anti-bacterial** (एंटी बैक्टीरियल)- बैक्टीरिया के फैलाव को रोकने एवं नष्ट करने का कार्य करता है।
- **Anti-inflammatory** (एंटी इंफ्लामेट्री)- संक्रमण (Infection) एवं सूजन को कम करने वाला।
- **Anti-diabetic** (एंटी डायबिटिक)- Type 1, Type 2 मधुमेह (Diabetes) को कम करने वाला।
- **Anti-tumour** (एंटी -ट्यूमर)- असामान्य कोशिका वृद्धि को रोकने वाला।
- **Anti-microbial** (एंटी माइक्रोबियल)- सूक्ष्मजीवों को नष्ट करता है एवं उनके विकास को रोकता है।
- **Anti-hypertensive** (एंटी हाइपरटेंसिव)- रक्तचाप संतुलन एवं उच्चरक्तचाप रोधी।
- **Anti-proliferative** (एंटी प्रोलिफेरेटिरेटिव)- घातक कोशिकाओं के प्रसार को रोकने व मंद करने वाला।
- **Anti-fatigue** (एंटी फटीग)- शरीर को ऊर्जान्वित एवं थकान को कम करने वाला।
- **Anti-oxidative** (एंटी आक्सीडेटिव)- कोशिका के अंदर अणुओं के ऑक्सीकरण (Oxidation) को रोकता है।
- **Anti-parasitic** (एंटी पैरासिटिक)- परजीवियों (Parasitism) द्वारा संक्रमण के प्रबंधन और उपचार में लाभप्रद।
- **Anhidrotic agent** (एनहाइड्रोटिक एजेंट)- सामान्य रूप से पसीने आने में असमर्थता को ठीक करने वाला।
- **Anti-nociceptive** (एंटी नोसाइसेप्टिव)- संवेदी न्यूरन्स द्वारा दर्दनाक या हानीकारक उत्तेजना को कम करने वाला।
- **Anti-leishmanial** (एंटी लीशमैनियल)- लीशमैनियासिस (त्वचा के घाव-जख्म) को ठीक करने वाला।

यज्ञ चिकित्सा अनुभव के प्रत्यक्ष प्रमाण देखने हेतु QR कोड को स्कैन करे

होतृषदनं हरितं हिरण्ययम् -अथर्व.-7.99.1 यज्ञकर्ता का घर सभी प्रकार के ऐश्वर्यों से भर जाता है।

विश्व शांति का एक नारा। यज्ञ से होगा जग उजियारा॥

रोगानुसार हवन सामग्री

प्राणेष्टि सामग्री - गुग्गुल, घी

MD, MND आदि आटो इम्युन डिजीज, मल्टीपल डिजीज तथा वंशानुगत रोगों में लाभप्रद।

मेधेष्टि सामग्री - गुग्गुल, घी

तनाव, अनिद्रा, सिरदर्द, स्मृतिदौर्बल्य, मिर्गी, पागलपन, पैरालाइसिस, पारकिंसन आदि मस्तिष्क संबंधी रोगों में लाभप्रद।

पित्तेष्टि सामग्री - गुग्गुल, घी

एसिडिटी, अधिक गर्मी, अधिक पसीना व शरीर से दुर्गंध आना, त्वचा-आँख - छाती आदि में जलन, अधिक कील-मुहासे आदि पित्तज रोगों में लाभदायक।

कफेष्टि सामग्री - गुग्गुल, कर्पूर

दमा, श्वास, कास, स्वरभेद, नजला, साइनस, खांसी आदि कफज रोगों में लाभप्रद।

कर्कटेष्टि सामग्री -गुग्गुल, घी

कैंसर तथा गाँठ में लाभप्रद।

वातेष्टि सामग्री - गुग्गुल, तिल तैल

गठिया, जोड़ों का दर्द, जकड़न, सर्वाइकल, सियाटिका आदि वातज रोगों में लाभप्रद।

प्रारब्धेष्टि सामग्री - गुग्गुल, दिव्येष्टि, घी

अज्ञात बिमारी (unknown disease), प्रारब्धदोष तथा संस्कार-जनित दोषों में लाभप्रद।

चर्मेष्टि सामग्री - गुग्गुल, घी

दाद, खाज, स्किन एलर्जी सफेद दाग, एक्जिमा, सोरायसिस आदि त्वचा रोगों में लाभप्रद।

सन्ततीष्टि सामग्री - गुग्गुल, घी

नि:संतानता, बन्ध्यत्व तथा प्रजनन तंत्र संबन्धित विकारों को दूर कर स्पर्म एवं ओवम के पोषण में लाभप्रद।

हृदयेष्टि सामग्री - गुग्गुल, घी

हार्टबीट, बी.पी., कोलेस्ट्रॉल, ट्राइग्लिसराइड आदि हृदयसंबंधी रोगों में लाभप्रद।

मधु-इष्टि सामग्री - गुग्गुल, घी

डायबिटीज, पैंक्रियाज टाइप-1, टाइप-2 डायबिटीज में लाभदायक।

गुग्गुल / दिव्येष्टि हवन धूप

संपूर्ण आरोग्य, घर में सुख-शांति व वातावरण को शुद्ध व सुगन्धित करने हेतु हवन धूप।

यज्ञ संम्बधित पुस्तकें

हवन - देव पूजन के लिए सर्वश्रेष्ठ गोमय समिधा, गाय का घी

विशेष रूप से ताम्र धातु एवं पीतल से निर्मित सुविधाजनक हवन कुंड एवं हवन में प्रयोग होने वाले पात्र आदि

चिकित्सा निर्देश

- प्रतिदिन सुबह-शाम रोगानुसार हवन सामग्री से रोग की अवस्थानुसार 21, 51 या 108 आहुतियां मंत्रेच्चारण पूर्वक प्रदान करें। प्रत्येक आहुति में 2 से 3 ग्राम गोघृत के साथ उसी अनुपात में रोगानुसार हवन सामग्री की भी आहुति दें।
- कक्ष में हवन करते समय खिड़की-दरवाजे खुले रखें तथा हवन के पश्चात् शांत-अग्नि के अंगारों पर प्रस्तुत रोगानुसार हवन सामग्री, गुग्गुल व घी आदि द्रव्यों के मिश्रण को रखें और उठ रही मंद सी धूनी वाले वायुमंडल में रोगानुसार योगाभ्यास करें।

ब्रह्मांड का केंद्र यज्ञ

जीवन व जगत की यात्रा अनादि व अनंत हैं। इस यात्रा का संचालक व संवाहक तत्व पुण्य है व पुण्य का आधारभूत तत्व यज्ञ है इसलिए वेदों में कहा :-
अयं यज्ञों विश्वस्य भुवनस्य नाभि : यज्ञ चरा चर, जड एवं चेतन जगत की नाभि है केंद्र है।

यज्ञ हमारी सांस्कृतिक धरोहर

भारतीय संस्कृति में 'यज्ञ, योग एवं आयुर्वेद' जैसी अमूल्य विद्याएं एवं विधाएं हैं,जो इस संस्कृति की 'मुकुटमणि ' हैं। इतिहास की ओर दृष्टि डालें तो 'भगवान् श्री राम, भगवान् श्री कृष्ण' से लेकर राजा -महाराजाओं, ग्रामवासियों व अरण्यवासी-ऋषियों की कुटियों तक नित्य व नैमित्तिक यज्ञ का प्रचलन देखने को मिलता है,जो सार्वभौमिक, वैज्ञानिक एवं पंथनिरपेक्ष पावनी परंपरंरा है।

यज्ञ मनुष्य मात्र के लिए

हमारा शरीर एवं संपूर्ण चरा चर जगत पंचतत्व से बना है। इन पांच तत्वों का यथा स्थिति बने रहने में ही हमारा एवं प्रकृति का हित है। सभी लोग एक ही वायु में श्वास लेते, एक ही सूर्य से ऊर्जा लेते,एक ही जल का पान करते, एक ही भूमि पर विचरण करते हैं तथा एक ही आकाश-मंडल के नीचे बसते हैं। चाहे कोई भी जाति, मत, पंथ, सम्प्रदाय को मानने वाला या अमीर हो,चाहे गरीब हो, चाहे किसी भी देश में रहने वाला हो, हम सब समान रूप से प्रकृति का उपभोग करते हैं। अत: हम सबका उत्तरदायित्व है कि हम इस प्रकृति माँ का पोषण और संवर्धन करें और वह कार्य संपन्न होता है यज्ञ से।

इदं हविर्या तुधनान् नदी फैनमि वा वहत्॥ -अथर्व. 1.8.2
यज्ञ मे होमी गई हवि रोग एवं प्रदूषण रूपी यातुधनों को वैसे ही वि नष्ट कर देती है जैसे नदी, झागों को।

धन आयन एवं ऋण आयन कण पर यज्ञ का प्रभाव

यज्ञ करने से ऋण आवेशित कणों की संख्या में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि होती है। और धन आवेशित कणों संख्या में कमी आती है। और ऋण आवेशित कण बाहुल्य वायुमंडल में रहने पर ब्लड सिरोटोनिनै (Erotonin) की मात्रा बढ़ती है। जिसके परिणाम स्वरूप शरीर क्षारीय (Alkaline) बनता है। और क्षारीय शरीर के अंदर कोई रोग नही होता और कोई रोग हो भी गया है तो शीघ्रता से दूर हो जाता है।

विकिरण (Radiation)

* यज्ञ से वाष्पीकृत आर्गेनिक अणु (Molecule) वायुमंडल में आने पर एटॉमिक रेडिएशन को पृथक (Dissociate) कर देता है। जिससे बीटा किरण रेडियोधर्मी (Radioactive) किरणों को तोड़ने में लग जाती है। और मानव शरीर तक नहीं पहुंच पाती हैं।
* इसी प्रकार यज्ञ के बाद विद्युत चुम्बकीय विकिरण (Electromagnetic Radiation) के स्तर में भी उल्लेखनीय कमी आती है।
* एटॉमिक रेडिएशन से प्रभावित द्रव्यों को यज्ञ भस्म के घोल में कुछ समय रखने पर भी उनमे से रेडिएशन दूर हो जाता है।

वायु प्रदूषण (Air pollution)

यज्ञ से उत्पन्न विभिन्न गेसों के वायुमंडल में आने पर प्रकाश रासायनिक अभिक्रिया (Photochemical process) द्वारा Indoor एवं outdoor दोनों ही स्तरों पर हानिकारक गैसें जैसे कि CO2, SO2, और NO2 पदार्थ (harmful particles) जैसे कि PM 2-5, PM 10 और RSPM के स्तर में आश्चर्यजनक रूप से कमी आती है।

माइक्रोबियल प्रदूषण (Microbiological pollution)

यज्ञ से उत्पन्न धूम्र में Eucalyptol, Endo-Borneol, p-Cyanoaniline जैसे माइक्रोबियल एक्टिविटी देने वाले Molecul मे होते हैं, जिसके वायुमंडल में फैलने पर विभिन्न Pathogenic Bacteria,Virus, Fungus आदि से हमारा बचाव करते हैं। तथा हवा को शुद्ध या कीटाणुरहित करने और पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

नैनो -प्रौद्योगिकी (Nanotechnology

वर्तमान समय नैनो टेक्नोलॉजी (Nanotechnology) का समय है। ऐसा कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि नैनो टेक्नोलॉजी पदार्थो को तोड़ करके सूक्ष्म से सूक्ष्मतर व सूक्ष्मतम कर उसके अंदर निहित प्रसुप्त शक्तियों को उजागर करती है यज्ञ पूर्णतः व सरलतम तरीके से पदार्थो को सूक्ष्मतम करने की अमोघ विधा है। धरती पर जितने पदार्थ है उनमे से अग्नि सबसे सूक्ष्म पदार्थ है। एवं उसका एक विशेष स्वाभाव होता है **अंडम नयति इति अग्नि** अर्थात जो भी पदार्थ यज्ञाग्नि के संपर्क में आता है उसको अपने जैसा सूक्ष्म से सूक्ष्मतम बना देती हैद्य सुक्षमिकरण से पदार्थ की शक्ति कई गुना बढ़ जाती

यज्ञ भस्म के लाभ

यज्ञ की भस्म के अंदर जीवनोपयोगी खनिज तत्व मौजूद होते हैं जैसे कि **Zinc, Iron, Calcium,Magnesium** आदि। अतः यज्ञ भस्म को खरल करके सेवन करने पर शरीर में खनिज तत्त्वों की कमी दूर होती है। तथा शरीर को क्षारीय (**Alkaline**) बनाता है। पेयजल में भस्म मिलाने से वह भी क्षारीय बनता है। यज्ञ भस्म में घी मिला करके लेपन करने से विभिन्न प्रकार के चर्म-रोग भी दूर होते हैं तथा पेड़-पौधों हेतु खाद एवं रोगों की रोकथाम में भी विशेषकर लाभप्रद होती है।

यज्ञ से पुण्य

यज्ञ पुण्यो की कृषि हैं, पुण्यो की फैक्ट्री है। आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों ही जीवन अर्थात जाति, आयु, और भोग तीनों ही हमारे द्वारा कृत कर्मो के पुण्य-अपुण्य कर्माश्यों के आधार पर प्राप्त होता है व पुण्य को प्राप्त करने का सबसे बड़ा उपाय या माध्यम है, तो वह है यज्ञ

यज्ञ के आध्यात्मिक लाभ

यज्ञ मानवी य चेतना का उत्कर्ष करके हमें अति मानस चेतना की ओर अग्रसर करता है। यज्ञ के अनुष्ठान से पंचप्राण, पंच उपप्राण, सप्तधातुओं का पोषण करने के साथ ही मूलाधार से लेकर सहस्त्रार पर्यंत अष्टचक्रों में शक्ति का संचार करता है।

भोजन के तीन प्रकार

मनुष्य एवं मनुष्येतर संपूर्ण जी व जो एनर्जी -ऊर्जा -शक्ति से चलायमान होता है, वह ऊर्जा हमें आहार के माध्यम से प्राप्त होती हैं। वे आहार हम तीन रूपों में ग्रहण करते हैं- ठोस, द्रव एवं गैस इन तीनों में सबसे ज्यादा व सबसे महत्वपूर्ण आहार कोई है तो वह है वायु रूप आहार जो हम खाते-पीते, उठते-बैठने से लेकर रात्रि शयन में भी निरंतर लेते हैं। उस वायु का शोधन, पोषण, औषधीय, सुगंधित एवं जीवनी य शक्ति से युक्त करने का कार्य किसी माध्यम से होता है तो वह है यज्ञ, हवन, अग्निहोत्र।

यज्ञ कृषि

यज्ञ करने से पौधों के विकास और विकास के लिए आवश्यक पादप हार्मोन या नीब्रा सिनोलाइड (**Brassinolide**) सक्रिय होते है तथा यज्ञ के दौरान निकलने वाले वाष्पशील (**Volatile**) पदार्थो के संपर्क में आने वाले पौधे फाइटोस्टेरॉइड (**Phytosteroid**) व ब्रैसिनोस्टेरॉइड (**Brassinosteroid**) के सक्रिय यौगिकों (**Ctivecompounds**) को उत्प्रेरित (**Trigar**) करते हैं, जो पौधों की वृद्धि और विकास के लिए आवश्यक होते हैं। यज्ञ फसलों में लगने वाले रोगों की रोकथा म करता है एवं भूमि की उर्वरा शक्ति को बढाता है। यज्ञ कृषि से उत्पन्न अन्न, फल, फूल, औषधियां आदि उत्तम पौषक तत्त्वों से युक्त होते हैं।

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्। -गीता -4.31
यज्ञ से बचे अमृत को खाने वाले यजमान परमात्मा को प्राप्त होते हैं।

जो तुम चाहते हो रोगों से छुटकारा , तो लो नियमित यज्ञ का सहारा।

प्राचीन शास्त्रों में यज्ञ की महिमा (Glory of Yagya in ancient scriptures)

येन सदनुष्ठानेन सम्पूर्णविश्वं कल्याणं भवेदाध्यत्मिकाधि-
दैविकाधिभौतिकतापत्रयोन्मूलनं सुकरं स्यात् तत् यज्ञपदाभिधेयम्

जिस सदनुष्ठा न से सम्पूर्ण विश्व का कल्याण हो तथा आध्यात्मिक-आधि दैविक-आधि भौतिक तीनों तापों का उन्मूलन सरल हो, उसे यज्ञ कहते हैं।

एतेषु यश्चरते भ्राजमानेषु यथाकालं चाहुतयो ह्याददायन्
तन्नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयो यत्र देवानां पतिरेकोऽधिवास।। (मु.उ. 1,2,5)

सात लपटों वाली अग्नि की शिखाओं में जो यजमान, ठीक समय पर आहुतियां देता हुआ कर्म को पूरा करता है, उसको ये आहुतियां , सूर्य किरणों में पहुंच कर संचित कर्मरूप हो कर वहां पहुंचा देती है। जहां जगत् के आधार परमात्मा को साक्षात् जाना जाता है।

यथेह क्षुधिता बाला मातरं पर्युपासते।
एवं सर्वाणि भूतान्यग्निहोत्रमुपासत्।। (छा .उ. 5,2,4,5)

इस लोक में जैसे भूखे बच्चे, माता से सुखादि की याचना करते हैं। ऐसे ही सारे प्राणी, अग्निहोत्र (यज्ञ) की उपासना करते हैं।

सर्वस्मात्पाप्मनो निर्मुच्यते स य एवं विद्वानग्निहोत्रं जुहोति ।। (जै.ब्रा .-1.9)

जो विद्वान् अग्निहो त्र करता है,वह सब पापों से छूट जाता है।
यज्ञशिष्टाशि न सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।

भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।। (गी ता 3.13)

यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाला अर्थात् यज्ञ कर प्रकृति को शुद्ध बनाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं,परंतु जो बिना यजन किए या केवल अपने पोषण के लिए ही भोजन पकाते हैं, वह रोगों व पापों को ही खाते हैं।

यज्ञदानतपकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् । (गी ता 18.5)

यज्ञ, दान और तपरूप कर्म त्याग करने के योग्य नहीं हैं, बल्कि वह तो अवश्य कर्तव्य है, क्यों कि यज्ञ, दान और तप- ये तीनों ही कर्म बुद्धिमान् पुरुषों को पवित्र करने वाले हैं।

अग्नौ प्रास्ताहुति सम्यगादत्यमुतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरष्टेन्नं तत् प्रजाः ।। (मनु. 3.76)

अग्नि में अच्छी प्रकार डाली हुई घृत, जड़ी -बूटी आदि पदार्थो की आहुति सूर्य को प्राप्त होती है और सूर्य किरणों से वातावरण में मि लकर अपना प्रभाव डालती है, फिर सूर्य से वर्षा होती है, वर्षा से अन्न आदि उत्पन्न होते हैं और उनसे सभी मनुष्यादि जीवों का पालन-पोषण होता है।

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्वधाऽअसि ।
परमेण धाम्ना दृंहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत् । (यजु. 1.2)

हे विद्या युक्त मनुष्य! तू जो यज्ञ शुद्धि का हेतु है। जो विज्ञान के प्रकाश का हेतु और सूर्य की किरणों में स्थिर होने वाला ,वायु के साथ देश-देशान्तरों में फैलने वाला, वायु को शुद्ध करने वाला व संसार का धारण करने वाला तथा जो उत्तम स्था न से सुख का बढ़ाने वाला है। इस यज्ञ का तू मत त्याग कर तथा तेरा यज्ञ की रक्षा करने वाला यजमान भी उसको न त्यागे।

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः । -गी ता -3.12
यज्ञ से तृप्त देवदेगण यजमान की इच्छाओं को पूर्ण करते हैं।

जब होगा योग यज्ञ और ध्यान, तभी बनेगा यह भारत महान।

स्वामी दयानन्द की दृष्टि में यज्ञ

* विद्वानों को चाहिए कि इस संसार के सुख के लिए यज्ञ से शोधे हुए जल से और वनों के रखने से अति ऊष्णता दूर करें। अच्छे बनाए हुए अन्न से बल उत्पन्न करें। यज्ञ के आचरण से तीन प्रका र के दुख आध्यात्मिक, आधि दैविक, आधि भौतिक को निवार के सुख को उन्नति देवें। ऋग्वेद 1.116.8
* मनुष्य को चाहिए कि वह आप्त विद्वानों के संग से धर्म, अर्थ, का म और मोक्ष की सिद्धि करने वाले यज्ञ का विस्तार करें।
*यज्ञ के अनुष्ठान से वायु और जल की उत्तम शुद्धि तथा पुष्टि होती है,वह दूसरे उपाय से कभी नही हो सकती। जो मनुष्य यज्ञ आदि से जल आदि पदार्थों को शुद्ध करके सेवन करते हैं, उन पर सुखरूप अमृत की वर्षा निरंतर होती है। यजुर्वेद 1.12, 36.12
* वर्षा का हेतु जो यज्ञ है उसका अनुष्ठा न करके नाना प्रकार के सुख उत्पन्न करनेचाहिए। क्यों कि यज्ञ के करने से वायु और वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा संसार में अत्यंत सुखद सिद्ध होता है।
* मनुष्यों को इस प्रकार का यज्ञ सदैव करना चाहिए जो पूर्ण श्री, संपूर्ण आयु, अन्न आदि पदार्थ रोगनाश और सब सुखों का विस्तार करता है। वह किसी को कभी नही छोड़ना चाहिए।
* मनुष्य को चाहिए कि जीवन पर्यंत शरीर, प्राण, अंतः करण, दसों इन्द्रियां और जो सबसे उत्तम सामग्री हो उसको यज्ञ के लिए समर्पित करें, जिससे पाप रहित कृत कृत्य हो के परमात्मा को प्राप्त हो कर इस जन्म और द्वितीय जन्म में सुख को प्राप्त हो वें।
*आर्यवर शिरोमणि महाशय, ऋषि -महर्षि , राजे-महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यवर्त देश दे रोगों से रहित एवं सुखों से पूरित था। अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।

वैश्विक चुनौतिया एवं यज्ञ (Global Challenges and Yagya)

आज निरंकुरं कुश भोगवाद के कारण प्राकृति के संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से पर्यावरण प्रदूषित हो चुका है। प्रदूषण एक ऐसा जहर है, जो कालांतर में अपने ही जनक को भस्मासुर की तरह भस्म कर देता है। आज हमने वायु-प्रदूषण,जल-प्रदूषण, ध्वनि -प्रदूषण से लेकर आण्विक-प्रदूषणों को जन्म दिया है। 130 देशों के 2500 साइंटिस्टों की टीम ने अपनी रिपोर्ट (Intergovernmental Panel on Climate Change) में जो बातें कही हैं,वह किसी संदेह की गुंजाइश नही रखती। धरती का तापमान इस सदी में 1.5 डिग्री बढ़ जाएगा, जिससे मौसम में आमूलचूल परिवर्तन होंगे। ग्लेशियर तेजी से पिघल जायेगें, समुद्र तटीय शहर संकट से घिरे होंगे, रोगों का भयानक हमला होगा, गंगा जैसी बड़ी 7 नदियों का जल स्तर कम हो जायेगा, कई पेड़-पौधें व पशु-पक्षियों की प्रजातियां विलुप्त हो जायेंगी, फसलों की पैदावार घटेगी, जिससे बहुत बड़ी जान-माल की हानि होगी। शताब्दी के अंत तक पूरी दुनिया में एक करोड़ से भी ज्यादा लोगों के सामने पीने के लिए पानी नही होगा। इस रिपोर्ट में कहे अनुसार आज हो ने भी लग चुका है। आज भारत जैसे देश की 40% नदियाँ सुख चुकी हैं, 55% कुएं सूख चुके हैं, 45% भूगर्भ जलस्तर नीचे जा चुके हैं। पूरी दुनिया के 10 बड़े ऐसे शहर है, जहां पर पानी की आपूर्त्ति कुछ ही दिनों के बाद समाप्त हो जायेगी, मनुष्य के लिए अत्यंत आवश्यक जल का भय जहां एक ओर है, तो वही दूसरी ओर वायु का। मनुष्य अन्न के बिना 3 महीने, जल के बिना 3 सप्ताह जीवित रह सकता है, परंतु वायु के बिना 3 मिनट भी नही, वही वायु जो जीवन देती हैं,आज जानलेवा हो चुकी है। भारत ही नही पूरी दुनिया में इसके खौप का डंका का बज चुका है तथा वायु-प्रदूषण रूपी भस्मासुर पूरी मानव सभ्यता के साथ-साथ अन्य पशु-पक्षी कीट-पतंगे, वनस्पति -औषधियों से लेकर संपूर्ण अस्तित्व को निगलने को तैयार है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के आंकड़ों के अनुसार 70 लाख से अधिक लोग केवल वायु-प्रदूषण के कारण मौत के मुह में समा जाते हैं। पूरी दुनिया में प्रकृति के साथ अब मनुष्य के ऊपर भी खतरे की घंटी बज चुकी है। यह ग्लोबल वार्मिग अब 'ग्लोबल वार्निग ' हो चुकी है,जिसका

समाधान है 'यज्ञ,

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः। -ऋग्. 1.164.34 यह यज्ञ भुवन का केन्द्र है।

दैनिक अग्निहोत्र
(देवयज्ञ-विधि)

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्वधाऽअसि। परमेण धाम्ना दृंहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्।।

अर्थात् : हे विद्यायुक्त मनुष्य! तू जो यज्ञ शुद्धि का हेतु है। जो विज्ञान के प्रकाश का हेतु और सूर्य की किरणों में स्थिर होने वाला, वायु के साथ देश-देशान्तरों में फैलने वाला, वायु को शुद्ध करने वाला व संसार का धारण करने वाला तथा जो उत्तम स्थान से सुख का बढ़ाने वाला है। इस यज्ञ का तू मत त्याग कर तथा तेरा यज्ञ की रक्षा करने वाला यजमान भी उस को न त्यागे ।

अग्निहोत्र से वायु एवं वृष्टि जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा संसार को सुख प्राप्त होना अर्थात् शुद्ध वायु का श्वास, स्पर्श, खान-पान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होना, इसीलिये इस को देवयज्ञ कहते हैं। (स०प्र० चतुर्थसमुल्लास)

– महर्षि दयानंद सरस्वती।

मंगलाचरण

ओ३म्...ओ३म्...ओ३म्... (इसका तीन बार लम्बा उच्चारण करें।)

आचमन मन्त्र

प्रस्तुत मन्त्र बोलकर दायीं हथेली में जल लेकर तीन आचमन करें।

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।। 1।। (इससे पहला आचमन।)

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।। 2।। (इससे दूसरा आचमन।)

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।। 3।। (इससे तीसरा आचमन।)

अंगस्पर्श मन्त्र

ओ३म् वाङ्म आस्ये अस्तु।। 1।। (इससे मुख का अधोभाग।) ओ३म् नसोर्मे प्राणो अस्तु।। 2।। (इससे नासिका के दोनों छिद्र।)
ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।। 3।। (इससे दोनों आँखें।) ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।। 4।। (इससे दोनों कान।)
ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु।। 5।। (इससे दोनों भुजाएँ।) ओ३म् ऊर्वोर्मे ओजो अस्तु।। 6।। (इससे दोनों जंघा।)
ओ३म् अरिष्टानि मे अङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।।7।। (इससे सम्पूर्ण शरीर पर जल छिड़कें।)

ईश्वर स्तुति प्रार्थना-उपासना मन्त्र

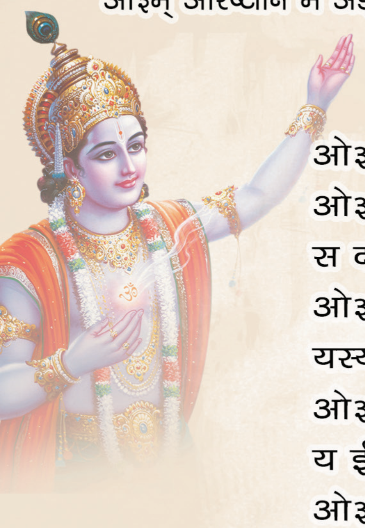

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।। 1।।
ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। 2।।
ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छाया अमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। 3।।
ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदः चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। 4।।
ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
योऽन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। 5।।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। 6।।
ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानाः तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।। 7।।
ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम।। 8।।

अथवा-

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।
तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू। तुझसे ही पाते प्राण हम, दुःखियों के कष्ट हरता है तू॥
तेरा महान् तेज है, छाया हुआ सभी स्थान। सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान॥
तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते-तेरी दया। ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥

दीप-प्रज्ज्वलन मन्त्र

प्रस्तुत मन्त्र का उच्चारण करते हुए दीपक जलायें। ओ३म् भूर्भुवः स्वः।

यज्ञकुण्ड में अग्नि स्थापित करने का मन्त्र

प्रस्तुत मन्त्र का उच्चारण करते हुए कपूर को दीपक से प्रज्वलित करके यज्ञकुण्ड में रखें।
ओ३म्-भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।।

अग्नि-प्रदीप्त करने का मन्त्र

प्रणाम मुद्रा में हाथों को रखते हुए मंत्रोच्चारण करें, पश्चात् घृताहुति देवें।
ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।। 2।।

समिधाधान मन्त्र

इस मंत्र से घृत में गिली की हुई प्रथम समिधा अग्नि में आहुत करें।
ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया
पशुभिब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे – इदन्न मम।। 1।।
इन दो मंत्रों से घृत में गिली की हुई द्वितीय समिधा अग्नि में आहुत करें।
ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा।। 2।।
ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे – इदं न मम।। 3।।
इस मंत्र से घृत में गिली की हुई तृतीय समिधा अग्नि में आहुत करें।
ओ३म् तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा।। इदमग्नयेऽङ्गिरसे – इदं न मम।। 4।।

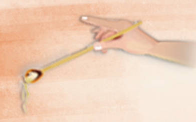

पंचघृताहुति मन्त्र

प्रस्तुत मन्त्र का पांच बार उच्चारण करें और प्रत्येक बार केवल घी की आहुति प्रदान करें।
ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान्
प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन अन्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे – इदं न मम।। 1।।

जलप्रोक्षण मन्त्र

निम्न मंत्रों से जल सिंचन करें।
ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व।। 1।। (इससे कुंड के पूर्व दिशा में बाई से दायीं ओर।)
ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व।। 2।। (इससे कुंड के पश्चिम दिशा में दायीं से बाईं ओर।)
ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व।। 3।। (इससे कुंड के उत्तर दिशा में दायीं से बाईं ओर।)
(निम्न मन्त्र से कुंड के पूर्व दिशा से शुरू करके वेदि के चारों ओर जल सेचन करें।)
ओ३म् देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचन्नः स्वदतु।। 4।।

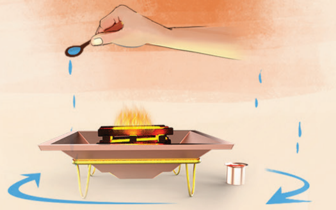

आघारावाज्यभागाहुति मन्त्र

प्रस्तुत मन्त्र से यज्ञकुण्ड के उत्तर में जलती हुई समिधा पर घी की धार बनाते हुए आहुति दें।

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये – इदं न मम।। 1।।

प्रस्तुत मन्त्र से यज्ञकुण्ड के दक्षिण में जलती हुई समिधा पर घी की धार बनाते हुए आहुति दें।

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय – इदं न मम।। 2।।

प्रस्तुत दो मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्य में जलती समिधा पर घी की आहुति दें ।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये – इदं न मम।। 3।।

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय – इदं न मम।। 4।।

प्रात:कालीन आहुतियों के मन्त्र

प्रस्तुत मन्त्रों से घी तथा सामग्री की आहुतियाँ प्रदान करें।

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिःसूर्यः स्वाहा।। 1।। ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।। 2।।

ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।। 3।। ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरूषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा।।4।।

सायंकालीन आहुतियों के मन्त्र

प्रस्तुत तीसरे मन्त्र से मौन रहकर अर्थात् ओ३म् तथा स्वाहा पद स्पष्ट बोले तथा शेष का मन में उच्चारण करके आहुति देवें।

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।। 1।। ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।। 2।।

ओ३म् (अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः) स्वाहा।। 3।।

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणोऽग्निर्वेतु स्वाहा।। 4।।

(नोटः यदि एक बार ही यज्ञ करे, तो दोनों समय के मंत्रों की आहुति दें।)

प्रात:-सायं दोनों समय की आहुतियों के मन्त्र

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय – इदं न मम।। 1।।

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय – इदं न मम।। 2।।

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय – इदं न मम।। 3।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः – इदं न मम।। 4।।

ओ३म् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।। 5।।

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।। 6।।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रन्तन्न आ सुव स्वाहा।। 7।।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।। 8।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा।। 9।।

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा।। 10।।

ओम् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् स्वाहा।। 11।।

राष्ट्र प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढ़ाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

स्विष्टकृदाहुति मन्त्र

प्रस्तुत मंत्र से घी के साथ भात/मिष्ठान या केवल घी से आहुति प्रदान करें :

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत्स्विष्ट- कृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम।

प्राजापत्याहुति मन्त्र

इस मन्त्र के प्रजापतये भाग को मन में बोलकर घृत की एक आहुति देवे।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये-इदन्न मम ।।

पूर्णआहुति मन्त्र

प्रस्तुत मन्त्र से घी तथा सामग्री की तीन आहुतियाँ प्रदान करें।

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।

दिव्य प्रार्थना

ओ३म् तेजोसि तेजो मयि धेहि। ओ३म् वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ।।
ओ३म् बलमसि बलं मयि धेहि। ओ३म् ओजोस्योजो मयि धेहि ।।
ओ३म् मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। ओ३म् सहोसि सहो मयि धेहि ।।

यज्ञ प्रार्थना

यज्ञरूप प्रभो! हमारे भाव उज्जवल कीजिए। छोड़ देवें छलकपट को, मानसिक बल दीजिए ।।1।।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें। हर्ष में हों मग्न सारे, शोक-सागर से तरें ।।2।।
अश्वमेधादिक रचायें, यज्ञ पर-उपकार को। धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को ।।3।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें। रोग-पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें ।।4।।
भावना मिट जाए मन से, पाप अत्याचार की। कामनाएँ पूर्ण होवें, यज्ञ से नर-नार की ।।5।।
लाभकारी हो हवन, हर प्राणधारी के लिए। वायु-जल सर्वत्र हों, शुभ-गन्ध को धारण किये ।।6।।
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा, प्रेम-पथ विस्तार हो। 'इदन्न मम' का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो ।।7।।
प्रेमरस में मग्न होकर, वन्दना हम कर रहें। 'नाथ' करुणारुप! करुणा, आपकी सब पर रहे ।।8।।

सर्वकुशल प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।
हे ईश सब सुखी हो कोई न हो दुखारी। सब हो निरोग भगवन धन धान्य के भण्डारी।
सब भद्र भाव देके सन्मार्ग के पथिक हो। दुखिया न कोई होवे सृष्टी में प्राण धारी।
हे नाथ सब सुखी हो कोई न हो दुखारी। सब हो निरोग भगवन धन धान्य के भण्डारी।

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
।। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

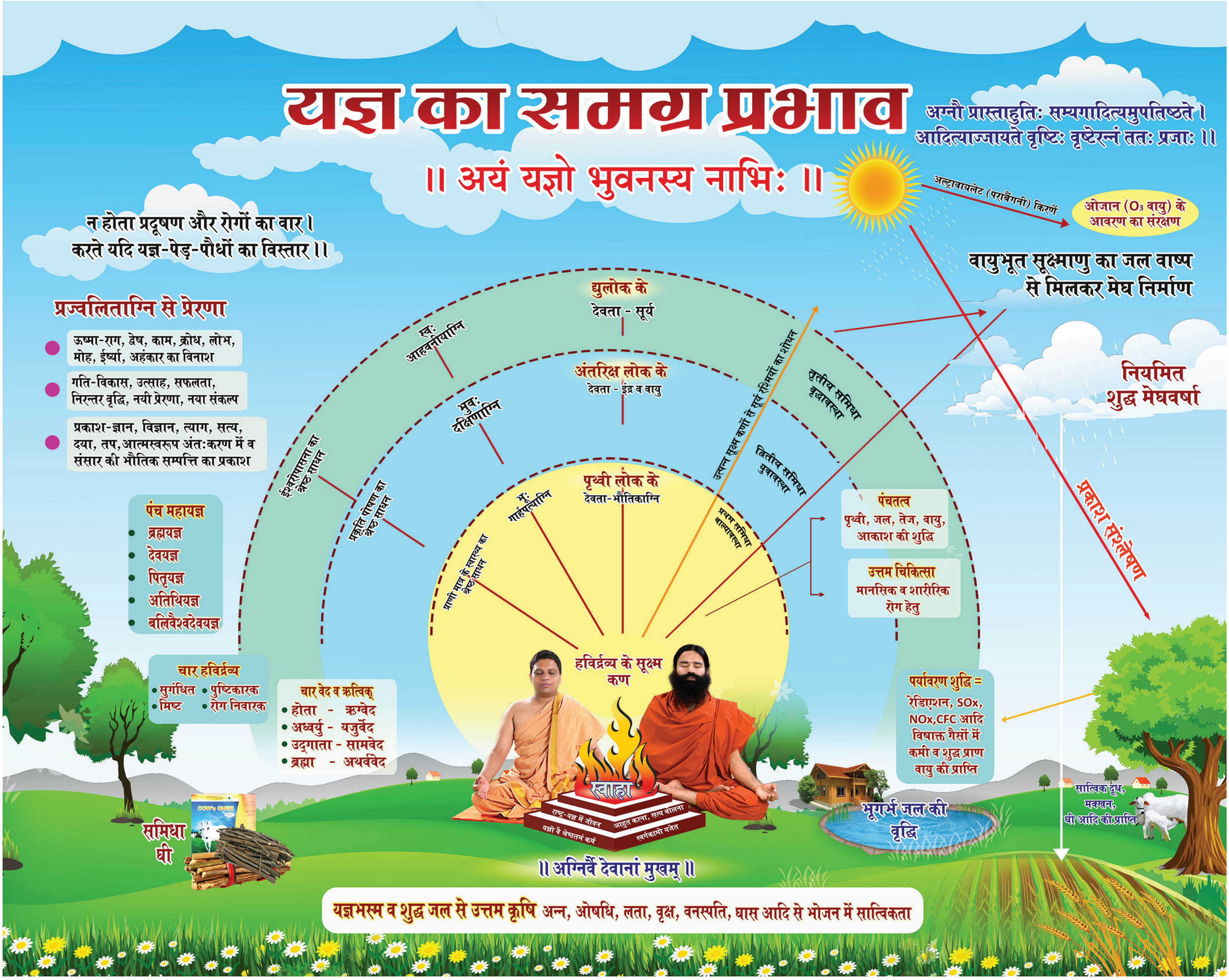

यज्ञ से समन्धित अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु QR कोड स्कैन करें

YAGYA.DIVYAYOGA.COM

YAGYA MAHIMA

भारतीय ऋषि संस्कृति जिसमें यज्ञ, योग एवं आयुर्वेद जैसी अमूल्य विद्याएं हैं।
द्रव्य-यज्ञ, योग-यज्ञ एवं ज्ञान-यज्ञ का त्रिवेणी संगम है- "यज्ञ-महोत्सव"

द्रव्य-यज्ञ :- जिसमें यज्ञ से रोगों की चिकित्सा, वायु आदि पंचतत्वों की शुद्धि, दोष, दुःख, दरिद्रता एवं अशुभ से मुक्ति पाने के साथ ही सामाजिक, पारिवारिक, शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक सुख एवं समृद्धि हेतु।

योग-यज्ञ :- जिसमें रोगानुसार योगाभ्यास एवं योग विज्ञान के गूढ़-रहस्यों पर प्रकाश।

ज्ञान-यज्ञ :- जिसमें वेद, उपनिषद, दर्शन एवं आयुर्वेद आदि जीवन उपयोगी शास्त्रों का स्वाध्याय एवं सत्संग।

यज्ञमहोत्सव का आयोजन करने हेतु संपर्क करें

Phone:- 9068565306 Email:-yajyavijyaanam@patanjaliyogpeeth.org.in

यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् । -गीता -18.5
यज्ञ दान व तप ये कर्म मनुष्यों को पवित्र करने वाले हैं।